International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 57-58

आधुनिक हिन्दी कहानियों में युवा

डॉ0 मोहम्मद अलीखॉन

प्राध्यापक, विवेकानंदा महाविद्यालय, करीमनगर जिला, तेलंगाना, भारत।

प्रस्तावना

संसार के सभी देशों से ज्यादा लग भग 60 प्रतिशत युवा भारत में हैं। देश का शक्तिशाली ऊर्जा युवा ही है। भविष्य युवकों के हाथ में ही है। युवाओं की आवश्यकता आज देश की उन्नति के बराबर का भागिदार होना चाहिए। युवाओं की परिपक्वता समस्या का समाधान आसानी से कर सकती है। किन्तु पाश्चात्य सभ्यता के रंग में डूबे युवा निरादर करना, अपनी शान समझते है जिसके कारण उनके नौतिक मूल्यों का पतन होने के साथ–साथ उनके आचारण में सभ्य, शिष्टाचार का उदय नहीं हो पा रहा है। युवक अपने स्वार्थ व क्षणिक सुक के लिए अपने से बड़ों का निरादर करना अपनी शिक्षित होने का प्रमाण समझते हैं। शिक्षा का वास्तविक सार नम्र, विनम्र मृदुभाषी और शिष्टता न समझ कर अशिष्टता को प्रमुखता देकर वे अनपढ़ या गवाँर सा व्यवहार करते हैं। जिसके कारण कटु वचनों द्वारा अपनी झुंझलाहट को गुस्से के तौर पर निकालते हैं। इस तरह के व्यवहार करते हुए युवा कई आधुनिक कहानियों में मिलते हैं। 'सुषमा–सिन्हा' जी की कहानी अंग्रेजीयत में मिलती है। ट्रेन में सफर कर रहे एक बुजुर्ग के अखबार माँगने पर नौजवान युवा बड़ी ही अशिष्टता से बर्ताव करना, अपने नैतिक मूल्यों का विकास ना करके अशिष्ट बना दिखना।

आज के युवक अमीर व्यक्तियों को ही प्रधानता दे रहे है, अमीर व्यक्तियों के आगे उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए जी हुजूरी करना और गरीबों का हमेशा तिरस्कार व अपमान करना आज युवकों की अपरिपक्व मानसिकता की पहचान बन गया है। जादातर युवाओं का जन्म मध्यवर्ग एवं गरीबी में होने के कारण वह पैसों को अपार महिमा एवं आस पास की ऊँची सोसायटी देखकर आकर्षित तो होता रहता है। 'शर्मिदा' कहानी में एक युवती अपने गरीब पड़ोसी के पैसे के आधार पर उनके स्टेटस को आकंती हुई अपने अमानवीय स्वभाव की दर्शाती है।

शीध्र अमीर बनने की लालच लिए भ्रष्ट लोगों के प्रलोभन और षड़यंत्र में फसकर अनैतिक तरीके से काम करने लगते हैं या फिर रोजगार ना मिलने के कारण दिशाहीन होकर आज के युवा अपराधी प्रवृत्ति के लिए विवश हो जाते दिख रहे हैं। जैसे लूट, चोरी, हत्या या हर अनैतिक काम जो धन की प्राप्ति करवा सके। ऐसी घटना 'फलकनुमा' कहानी में डॉ. अप्पाराव जी ने दिखाया है। युवाओं बेरोज़गारी के कारण ट्रेन में महिलाओं की चेन छीनते हुए दर्शाया गया है। लेकिन युवा गण यह नहीं समझती कि बेरोज़गार युवा को परिवार या समाज में कोई सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता है।

बेरोज़गारी के कारण युवा वर्ग समाज में फैले अंधविश्वास व आड़म्बरों के नाम पर धर्म की आड़ में धन कमाता है। कभी धर्म के नाम पर हिंसा फैलाता है। ये साधु–संन्यासीयों का मज़ाक उड़ाते वे साधु सन्यासी बनकर चोरी, लूट या स्मगलिंग जैसे गलत काम करते दिख रहे है। इसी स्थिति का वर्णन डॉ. आशा पार्थक जी की कहानी 'बेरोज़गार' में किया है जो रोजगार के लिए झूठे धर्म के नाम पर पैसा कमाकर लोगों की भावनाओं से खेलता है। नेतागण अपनी अनौतिक कामों के लिए युवा को इस्तेमाल कर लेते हैं धन का लालच में युवा हर अनौतिक काम करने में तुले हैं।

आज कल के युवा आनेवाली पत्नी में बहु–प्रतिभा के साथ–साथ शिक्षित व नौकरी पेशा होने की चाह रखता है क्यों कि पत्नी की पैसों से ऐशों–आराम करें। इस तरह काम–चोर की भूमिका निभाते हैं, समाज में नकारात्मक छवि को सामने लाते हैं। भौतिक सुख की ही प्रधानता दे रहे हैं। परन्तु यह नहीं सोचते कि एक कर्मठ व ईमानदार बनने के लिए किसी भी परिस्थिति का सामना करना उनसे कठिन नहीं होगा। आज समाज में दहेज प्रता चल रही हैं यह कुप्रथा का विरोध एक पढ़ा लिखा युवक नहीं करता दिख रहा है। देहज देना और लेना एक फैशन या रिवाज समझाा जाने लगा है। विवाह चाहे प्रेम विवाह हो या तयशुदा विवाह, देहज अनिवार्य और अति आवश्यक बन गया है। युवा इसे मुफ्त का माल समझने लगी है। 'सुषमा' जी की कहानी 'दहेज' में इस युवा लालची मानसिकता की अवहेलना करते हुए दहेज के लालचियों का विरोध किया है। इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए युवा शिक्षित होना जरूरी है। समर्थ युवा या युवितयों का दृढ़ संकल्प इसे बदल सकता है। 'सुषमा सिन्हा' की कहानी 'शराब' में पति द्वारा प्रताड़ित पत्नी अपनी बेटी को अपना दुःख बताते हुए कहती है कि ''शादी के इतने वर्षों बाद भी प्रताड़ित कर रहे हैं। वो भी दहेज के लिए .....।''

प्रेम–विवाह को युवा कुछ हद तक बढावा दे सकता है जिसमें धर्म, जाति, वर्ग और समुदाय और दहेज का इस में कोई स्थान नहीं देना। तयशुदा विवाह में उम्र, सुन्दरता, जाति, नौकरी और शिक्षा को महत्व दिया जाता है। प्रेमी जोड़ी को वे लोग चरित्रहीन या बदचलन के नाम से संबोधित करते हैं। 'दैहिक ऋतुओं के पार में' इस कहानी में बेटी के प्यार के बारे में जानकर माँ अपनी बेटी को चरित्रहीन तक कह देती है। रजनी यह बात अपने प्रेमी को बतलाती है कि ''हाँ फेरू! अम्मा हमें चरित्रहीन कहती है। क्या प्रेम करना चरित्रहीन है?''।

युवा पीढ़ी पर फिल्मों का प्रभाव पडता है। फिल्मों में जिस तरह होता है उसकी नकल करने की कोशिश युवा करती दिखाई दे रही है। 'अन्ततोगत्वा' कहानी में लेखिका पुष्पा जी यह साबित करने की प्रयास की है कि नादान एवं अपरिपक्व मानसिकता वाले युवा का हाल बताती है कि अयोग्य वर को चुनना टाट–भाट देख कर जल्द बाजी में शादी करने से उसके परिणाम पुरे जीवन पर पड़ना यह गलत चुनाव के कारण जीवन नरकमय बनता है। 'कहानी शो खत्म हुआ' में चैटिंग से धोखा खाने के बाद पछताना पड़ता है।

युवी पीढ़ी को अभिशाप या अत्याचारी नहीं, परिवेश व अच्छी गाईडालन के साथ अच्छे व्यक्तित्व के नागरिक बना सकते हैं। जहाँ दया, क्षमा, परोपकार जैसे नैतिक मूल्यों का बदलता स्वरूप ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ और दुष्ट भावना ने ले लिया है। युवाओं की इस विचार परिस्थिति को सुधार की तरफ सिर्फ माता–पिता व शिक्षक ले जा सकता हैं। शिक्षक अपने संस्कार एवं नैतिक मूल्यों द्वारा निःस्वार्थ भाव से शिक्षा का दान करे तो शिक्षा व्यवस्था के

साथ–साथ विद्यार्थियों का उज्जवल भविष्य बन जायेगा। आधुनिक काल की कहानियों द्वारा युवा मानसिक रूप से बदलते हुए अपने आप को सुधार ने की कोशिश करेगा। क्यों कि साहित्य ही समाज का दर्पण है।

समाज की कुरीति या कुप्रथा का खण्ड़न–मण्ड़न करना चाहिए। देश की शासन व्यवस्था एवं भ्रष्टाचार का दुष्प्रभाव हर वर्ग के लोगों को दूषित कर रहा है, जिससे युवा पीढ़ी सशक्त व सक्ष्म होने के कारण बुराइयों को शीध्र अपनाने की जल्दी करती है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक क्रिया–कलापों के नकारात्मक व सकारात्मक प्रभाव की छाया युवा वर्ग पर पड़ती है। युवाओं को समाज व देश के संचालन करने से पहले एक अच्छा इंसान बनाना चाहिए। जिससे देश प्रगति की ओर बड़ेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अंग्रेजीयता – सुषमा सिन्हा
2. फलकनुमा – डॉ0 अप्पाराव
3. बेरोज़गार – डॉ0 आशा पार्थक
4. दक्षिण भारत – अंक – 163
5. दहेज – सुषमा सिन्हा
6. अन्ततोगत्वा – पुष्पा